International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

औरंगज़ेब की नीतियाँ और मुगल साम्राज्य का विस्तार

Kamla Shanker Regar

History
Behind of railway station, Chanderiya, Distt. Chittorgarh 312021

सारांश (Abstract)

मुगल साम्राज्य का इतिहास भारतीय मध्यकालीन इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें विभिन्न शासकों ने अपनी नीतियों और प्रशासनिक दृष्टिकोण के माध्यम से साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण का प्रयास किया। औरंगज़ेब (1658–1707) मुगल साम्राज्य का अंतिम शक्तिशाली सम्राट माना जाता है। उसके शासनकाल में साम्राज्य का क्षेत्रफल अपने चरम पर पहुँचा, विशेष रूप से दक्षिण भारत में व्यापक विस्तार हुआ। किन्तु उसकी धार्मिक, प्रशासनिक एवं सैन्य नीतियों ने दीर्घकालीन दृष्टि से साम्राज्य की स्थिरता को प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में औरंगज़ेब की नीतियों का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन किया गया है कि किस प्रकार उसकी सैन्य, धार्मिक एवं प्रशासनिक नीतियों ने मुगल साम्राज्य के विस्तार में योगदान दिया और साथ ही उसके पतन के कारणों को भी जन्म दिया।

प्रस्तावना (Introduction)

मुगल साम्राज्य की स्थापना 1526 ई. में Babur द्वारा प्रथम पानीपत के युद्ध के पश्चात हुई, जिसने भारत में एक शक्तिशाली केंद्रीय साम्राज्य की नींव रखी। उसके उत्तराधिकारियों—हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ—ने इस साम्राज्य को क्रमशः संगठित, विस्तृत और सुदृढ़ बनाया। विशेष रूप से अकबर के शासनकाल में मुगल साम्राज्य ने राजनीतिक स्थिरता, प्रशासनिक दक्षता और सांस्कृतिक समन्वय के माध्यम से एक सुदृढ़ संरचना प्राप्त की। अकबर की धार्मिक सहिष्णुता, राजपूत नीति, मनसबदारी व्यवस्था, भू-राजस्व सुधार तथा प्रांतीय प्रशासन की सुव्यवस्थित प्रणाली ने साम्राज्य को दीर्घकालीन स्थायित्व प्रदान किया।

अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में भी साम्राज्य की शक्ति और वैभव बना रहा, यद्यपि प्रशासनिक संरचना में कुछ हद तक दरबारी विलासिता और खर्चों में वृद्धि देखने को मिली। इसी पृष्ठभूमि में औरंगज़ेब ने 1658 ई. में सत्ता संभाली। उसका शासनकाल लगभग पचास वर्षों तक चला, जो मुगल इतिहास का सबसे लंबा और निर्णायक काल माना जाता है। औरंगज़ेब ने अपने पूर्वजों की विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ाते हुए साम्राज्य की सीमाओं को उत्तर-पश्चिम से लेकर दक्कन और दक्षिण भारत के विस्तृत क्षेत्रों तक फैला दिया। उसके शासनकाल में मुगल साम्राज्य भौगोलिक दृष्टि से अपने चरम विस्तार पर पहुँचा। बीजापुर और गोलकुंडा जैसे शक्तिशाली दक्कनी राज्यों का विलय तथा दक्षिण में दीर्घकालीन सैन्य अभियानों ने साम्राज्य की सीमाओं को अभूतपूर्व रूप से विस्तारित किया।

किन्तु औरंगज़ेब की नीतियाँ अपने पूर्ववर्ती सम्राटों, विशेषकर अकबर की समन्वयवादी एवं उदार नीति से भिन्न थीं। उसने शासन में धार्मिक सिद्धांतों को अधिक महत्व दिया और प्रशासन में सादगी, अनुशासन तथा केंद्रीकरण को प्राथमिकता दी। उसकी धार्मिक नीति, जज़िया कर की पुनर्स्थापना, कुछ मंदिरों के विध्वंस तथा दरबारी सांस्कृतिक गतिविधियों पर नियंत्रण जैसी नीतियों ने साम्राज्य के विभिन्न वर्गों—राजपूतों, मराठों, जाटों और सिखों—के साथ संबंधों को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, दक्कन में लंबे समय तक चलने वाले सैन्य अभियानों ने साम्राज्य के वित्तीय और प्रशासनिक संसाधनों पर भारी दबाव डाला। क्षेत्रीय शक्तियों का उभार, निरंतर विद्रोह और प्रशासनिक चुनौतियाँ धीरे-धीरे मुगल सत्ता की आधारशिला को कमजोर करने लगीं।

इस प्रकार औरंगज़ेब का शासनकाल एक विरोधाभासी ऐतिहासिक परिघटना प्रस्तुत करता है—एक ओर साम्राज्य का अभूतपूर्व क्षेत्रीय विस्तार और दूसरी ओर आंतरिक असंतोष तथा प्रशासनिक संकट। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य औरंगज़ेब की नीतियों का समग्र विश्लेषण करते हुए यह

समझना है कि उसकी सैन्य, धार्मिक और प्रशासनिक नीतियों ने मुगल साम्राज्य के विस्तार में किस प्रकार योगदान दिया तथा किस सीमा तक वे इसके दीर्घकालीन पतन के कारण भी बनीं।

औरंगज़ेब का सत्ता ग्रहण और प्रारंभिक नीति

1657 ई. में सम्राट Shah Jahan के अस्वस्थ होने के बाद मुगल साम्राज्य में उत्तराधिकार का संकट उत्पन्न हो गया। उनके चारों पुत्र—दारा शिकोह, शुजा, मुराद और औरंगज़ेब—सत्ता प्राप्ति के लिए संघर्ष में उतर आए। इस उत्तराधिकार युद्ध में औरंगज़ेब ने सैन्य कौशल, राजनीतिक चातुर्य और रणनीतिक गठबंधनों के माध्यम से अपने प्रतिद्वंद्वियों को पराजित किया। विशेष रूप से Dara Shikoh, जो शाहजहाँ का प्रिय पुत्र और उत्तराधिकारी माना जाता था, 1659 ई. में पराजित एवं मृत्युदंड दिया गया। इसके बाद औरंगज़ेब ने स्वयं को आलमगीर की उपाधि के साथ मुगल सम्राट घोषित किया। सत्ता ग्रहण के बाद औरंगज़ेब का प्रमुख उद्देश्य साम्राज्य का केंद्रीकरण, प्रशासनिक अनुशासन की पुनर्स्थापना तथा सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करना था। उसने शासन व्यवस्था में शाही नियंत्रण को मजबूत करने का प्रयास किया और प्रांतीय अधिकारियों पर कड़ी निगरानी रखी। उसके शासन का प्रारंभिक चरण प्रशासनिक सुधारों और अनुशासन की स्थापना के प्रयासों से चिह्नित था।

औरंगज़ेब ने दरबार में सादगी और संयम को बढ़ावा दिया। उसने शाही दरबार की विलासिता और अनावश्यक खर्चों में कटौती की तथा शाही जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी सादगी अपनाई। संगीत, नृत्य और भव्य उत्सवों जैसी गतिविधियों को सीमित किया गया, जिससे दरबार का स्वरूप अधिक औपचारिक और अनुशासित बन गया। साथ ही उसने भ्रष्टाचार और वित्तीय अनियमितताओं पर नियंत्रण के लिए कठोर कदम उठाए तथा राजस्व संग्रह प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया।

प्रशासनिक स्तर पर उसने पूर्ववर्ती मुगल व्यवस्थाओं को पूर्णतः समाप्त करने के बजाय उन्हें अधिक नियंत्रित और व्यवस्थित रूप में लागू किया। मनसबदारी व्यवस्था को बनाए रखते हुए सेना की संख्या और संरचना को सुदृढ़ किया गया। सैनिकों की नियुक्ति, वेतन और निरीक्षण की प्रक्रिया को अधिक कठोर बनाया गया ताकि सैन्य दक्षता और अनुशासन सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, औरंगज़ेब ने न्याय व्यवस्था को भी अधिक व्यवस्थित करने का प्रयास किया। इस्लामी कानूनों के संकलन के रूप में *फतावा-ए-आलमगीरी* तैयार कराया गया, जो प्रशासनिक और न्यायिक निर्णयों के लिए मार्गदर्शक बना।

इस प्रकार औरंगज़ेब का प्रारंभिक शासनकाल एक सुदृढ़, अनुशासित और केंद्रीकृत शासन व्यवस्था स्थापित करने के प्रयासों का काल था। यद्यपि इन नीतियों ने प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत किया, किंतु आगे चलकर अत्यधिक केंद्रीकरण, सैन्य विस्तार और वैचारिक कठोरता ने साम्राज्य के सामने नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न कीं।

मुगल साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार

औरंगज़ेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य भौगोलिक दृष्टि से अपने चरम विस्तार पर पहुँच गया। उसने अपने पूर्ववर्ती शासकों की विस्तारवादी नीति को और अधिक आक्रामक रूप में अपनाते हुए उत्तर भारत से लेकर दक्कन और दक्षिण भारत तक मुगल सत्ता स्थापित करने का प्रयास किया। उसके शासनकाल में साम्राज्य का विस्तार तो हुआ, किंतु यह विस्तार दीर्घकालीन सैन्य अभियानों, भारी आर्थिक व्यय और प्रशासनिक दबाव के साथ जुड़ा हुआ था।

1. **दक्षिण भारत में विस्तार:** औरंगज़ेब की सबसे महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धि दक्कन क्षेत्र में मुगल सत्ता का विस्तार थी। दक्षिण भारत लंबे समय से मुगल नीति का प्रमुख लक्ष्य रहा था, परंतु औरंगज़ेब ने इसे अपनी प्राथमिकता बना लिया। उसने Deccan Campaigns के अंतर्गत दक्कन के शक्तिशाली सुल्तनत राज्यों—बीजापुर और गोलकुंडा—के विरुद्ध अभियान चलाया। 1686 ई. में बीजापुर और 1687 ई. में गोलकुंडा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया। गोलकुंडा के अधिग्रहण से मुगलों को अपार धन-संपत्ति और हीरे के प्रसिद्ध खानों पर नियंत्रण प्राप्त हुआ। इन विजयों के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का क्षेत्रफल दक्षिण में कर्नाटक और तमिल क्षेत्र की सीमाओं तक

विस्तृत हो गया। हालाँकि, दक्कन के इन अभियानों ने मुगल प्रशासन और वित्तीय संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला, क्योंकि सम्राट को लंबे समय तक दक्षिण में ही रहकर सैन्य संचालन करना पड़ा।

2. **मराठों से संघर्ष:** दक्कन में मुगल विस्तार के सामने सबसे बड़ी चुनौती मराठा शक्ति थी। Shivaji के नेतृत्व में मराठों ने एक सशक्त क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरकर मुगल सत्ता को चुनौती दी। शिवाजी की मृत्यु (1680) के बाद भी उनके उत्तराधिकारी—सम्भाजी, राजाराम और ताराबाई—ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। मराठों की गुरिल्ला युद्ध पद्धति (छापामार युद्ध) मुगल सेना के लिए अत्यंत कठिन सिद्ध हुई। वे पहाड़ी क्षेत्रों और दुर्गों का उपयोग कर अचानक आक्रमण करते और फिर शीघ्र ही पीछे हट जाते थे। यद्यपि औरंगज़ेब ने अनेक किलों पर अधिकार किया और कई मराठा नेताओं को पराजित किया, फिर भी वह मराठा शक्ति को पूर्णतः समाप्त नहीं कर सका। इसके विपरीत, लंबे संघर्ष ने मुगल सेना को थका दिया और साम्राज्य के आर्थिक संसाधनों को कमजोर कर दिया।

3. **उत्तर-पश्चिम और सीमांत नीति:** औरंगज़ेब ने केवल दक्षिण भारत पर ही ध्यान केंद्रित नहीं किया, बल्कि उत्तर-पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा को भी महत्वपूर्ण माना। अफगान कबीलों और सीमांत क्षेत्रों में विद्रोहों को नियंत्रित करने के लिए उसने सैन्य अभियानों का संचालन किया। काबुल, कंधार और सिंध के क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास किया गया ताकि विदेशी आक्रमणों की संभावना को कम किया जा सके। सीमांत क्षेत्रों में किलों की सुरक्षा, सैन्य तैनाती और प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत किया गया।

औरंगज़ेब के शासनकाल में मुगल साम्राज्य का विस्तार भौगोलिक दृष्टि से अभूतपूर्व था। उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में तंजावुर के निकट क्षेत्रों तक और पश्चिम में अफगान सीमाओं से लेकर पूर्व में बंगाल तक मुगल सत्ता स्थापित हो गई थी। किन्तु यह विस्तार स्थायी प्रशासनिक नियंत्रण की अपेक्षा सैन्य प्रभुत्व पर अधिक आधारित था। निरंतर युद्ध, क्षेत्रीय प्रतिरोध और प्रशासनिक कठिनाइयों ने इस विस्तार को दीर्घकालीन रूप से अस्थिर बना दिया। इस प्रकार औरंगज़ेब की विस्तार नीति ने साम्राज्य को विशाल तो बना दिया, परंतु उसकी प्रशासनिक और आर्थिक नींव को कमजोर भी कर दिया।

धार्मिक नीति और उसका प्रभाव

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति उसके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण तथा विवादास्पद विशेषताओं में से एक रही है। उसने शासन को इस्लामी सिद्धांतों के अनुरूप संचालित करने का प्रयास किया और व्यक्तिगत जीवन में भी धार्मिक अनुशासन, सादगी तथा शरीयत-आधारित आचरण को प्राथमिकता दी। उसका दृष्टिकोण उसके पूर्ववर्ती सम्राटों विशेषकर अकबर की धार्मिक सहिष्णुता और समन्वयवादी नीति से भिन्न था।

जज़िया कर की पुनर्स्थापना

1679 ई. में औरंगज़ेब ने गैर-मुस्लिम प्रजा पर जज़िया कर को पुनः लागू किया, जिसे अकबर ने समाप्त कर दिया था। इस कर का उद्देश्य इस्लामी शासन की परंपरा को पुनर्स्थापित करना था, किंतु इसका व्यापक राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव पड़ा। विशेष रूप से हिंदू व्यापारियों, कृषकों और शहरी वर्गों में इस निर्णय के प्रति असंतोष उत्पन्न हुआ। इससे मुगल शासन और प्रजा के बीच मनोवैज्ञानिक दूरी बढ़ी।

मंदिरों से संबंधित नीति

औरंगज़ेब के शासनकाल में कुछ प्रमुख मंदिरों के ध्वंस अथवा उन पर नियंत्रण की घटनाओं का उल्लेख मिलता है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ राजनीतिक विद्रोह या प्रशासनिक विरोध की स्थिति थी। यद्यपि सभी मंदिरों के विरुद्ध कोई सार्वभौमिक नीति नहीं थी और अनेक मंदिरों को शाही संरक्षण भी प्राप्त रहा, फिर भी कुछ प्रमुख धार्मिक स्थलों के विध्वंस की घटनाओं ने व्यापक असंतोष और धार्मिक तनाव को जन्म दिया।

सांस्कृतिक गतिविधियों पर नियंत्रण

औरंगज़ेब ने दरबार की सांस्कृतिक परंपराओं में भी परिवर्तन किया। उसने संगीत, नृत्य और कुछ प्रकार के मनोरंजन को दरबारी संरक्षण से हटा दिया। शाही दरबार, जो पूर्ववर्ती सम्राटों के समय कला और संस्कृति का प्रमुख केंद्र था, अधिक औपचारिक और धार्मिक अनुशासनयुक्त बन गया। हालांकि समाज में संगीत और कला पूरी तरह समाप्त नहीं हुए, परंतु शाही संरक्षण के अभाव में उनके विकास की गति प्रभावित हुई।

धार्मिक कानून और प्रशासन

उसके शासनकाल में इस्लामी कानूनों का संकलन *फतावा-ए-आलमगीरी* के रूप में कराया गया, जो न्यायिक एवं प्रशासनिक निर्णयों के लिए मार्गदर्शक बना। इससे प्रशासन में धार्मिक तत्वों का प्रभाव बढ़ा और शासन की प्रकृति अधिक रूढ़िवादी हो गई।

धार्मिक नीति का राजनीतिक प्रभाव

इन नीतियों के कारण विभिन्न क्षेत्रीय और सामाजिक समूहों में असंतोष बढ़ा। राजपूतों के साथ संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ, विशेषकर मारवाड़ और मेवाड़ के मामलों में। जाटों और सतनामियों ने विद्रोह किए, जबकि मराठों का प्रतिरोध और अधिक सशक्त हो गया। सिख समुदाय के साथ संबंध भी तनावपूर्ण हो गए। नौवें सिख गुरु Guru Tegh Bahadur की मृत्यु के बाद सिख समुदाय में असंतोष बढ़ा और दसवें गुरु Guru Gobind Singh के नेतृत्व में सिखों का सैन्यीकरण हुआ। खालसा पंथ की स्थापना (1699) ने सिखों को एक संगठित सैन्य शक्ति में परिवर्तित कर दिया, जिसने आगे चलकर मुगल सत्ता को चुनौती दी।

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति ने शासन की वैचारिक दिशा को तो स्पष्ट किया, किंतु इसके दीर्घकालीन राजनीतिक परिणाम गंभीर रहे। धार्मिक कठोरता के कारण मुगल साम्राज्य की वह सामाजिक-राजनीतिक समन्वय की परंपरा कमजोर हुई, जिसने अकबर और उसके उत्तराधिकारियों के समय साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की थी।

इस प्रकार औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियाँ अल्पकालीन प्रशासनिक नियंत्रण और वैचारिक अनुशासन की दृष्टि से महत्वपूर्ण थीं, किंतु दीर्घकाल में उन्होंने विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय शक्तियों को मुगल सत्ता के विरुद्ध संगठित होने का अवसर भी प्रदान किया।

प्रशासनिक एवं आर्थिक नीति

औरंगज़ेब ने अपने शासनकाल में प्रशासनिक अनुशासन, केंद्रीकरण और नियंत्रण को विशेष महत्व दिया। उसने मुगल प्रशासन की परंपरागत व्यवस्थाओं—जैसे मनसबदारी, जागीरदारी और प्रांतीय प्रशासन—को बनाए रखते हुए उन्हें अधिक नियंत्रित और प्रभावी बनाने का प्रयास किया। प्रांतीय सूबेदारों, फौजदारों और राजस्व अधिकारियों पर कड़ी निगरानी रखी गई तथा भ्रष्टाचार और वित्तीय अनियमितताओं को रोकने के लिए कठोर निर्देश जारी किए गए।

औरंगज़ेब ने प्रशासन में सादगी और मितव्ययिता को बढ़ावा दिया तथा शाही खर्चों में कटौती करने का प्रयास किया। न्याय व्यवस्था को व्यवस्थित करने के लिए इस्लामी कानूनों के संकलन *फतावा-ए-आलमगीरी* को तैयार कराया गया, जिससे प्रशासनिक और न्यायिक निर्णयों में एकरूपता लाई जा सके। किन्तु इन सुधारों के बावजूद उसके शासनकाल में आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। इसका प्रमुख कारण दक्कन में लंबे समय तक चलने वाले सैन्य अभियान थे। Deccan Campaigns पर अत्यधिक व्यय होने से शाही खजाने पर भारी दबाव पड़ा। सेना के रख-रखाव, रसद, किलों की घेराबंदी और निरंतर सैन्य गतिविधियों ने साम्राज्य की आय से अधिक व्यय की स्थिति उत्पन्न कर दी। इसके अतिरिक्त मनसबदारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई, जिससे जागीरों की उपलब्धता कम पड़ने लगी। जागीरों की कमी के कारण मनसबदारों को पर्याप्त आय प्राप्त नहीं हो पाती थी, जिससे वे किसानों से अधिक कर वसूलने लगे। परिणामस्वरूप राजस्व व्यवस्था पर दबाव बढ़ा और कृषकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी।

भूमि-राजस्व मुगल अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था। जब करों की दरें बढ़ीं और वसूली कठोर हुई, तो ग्रामीण क्षेत्रों में असंतोष बढ़ने लगा। अनेक स्थानों पर किसान उत्पादन छोड़कर पलायन करने लगे, जिससे कृषि उत्पादन और राजस्व दोनों प्रभावित हुए। इस प्रकार आर्थिक दबाव ने साम्राज्य की आधारभूत संरचना को कमजोर कर दिया।

क्षेत्रीय विद्रोह और चुनौतियाँ

औरंगज़ेब के शासनकाल में प्रशासनिक कठोरता, आर्थिक दबाव, धार्मिक नीतियों और क्षेत्रीय असंतोष के कारण अनेक विद्रोह हुए। ये विद्रोह केवल स्थानीय असंतोष तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने मुगल सत्ता की स्थिरता को गंभीर चुनौती दी। मथुरा और आगरा क्षेत्र में जाटों ने

विद्रोह किया। यह विद्रोह प्रारंभ में करों की कठोर वसूली और स्थानीय अधिकारियों के अत्याचार के विरुद्ध था, किंतु बाद में यह एक संगठित राजनीतिक चुनौती के रूप में उभरा। जाट नेताओं ने किलों पर अधिकार कर स्वतंत्र शक्ति स्थापित करने का प्रयास किया।
इसी प्रकार हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सतनामी विद्रोह हुआ। सतनामियों ने मुगल प्रशासन और स्थानीय अधिकारियों के विरुद्ध संघर्ष किया, जिसे दबाने के लिए शाही सेना को हस्तक्षेप करना पड़ा।

पंजाब क्षेत्र में सिख समुदाय और मुगल प्रशासन के बीच संबंध तनावपूर्ण हो गए। नौवें सिख गुरु Guru Tegh Bahadur की मृत्यु के बाद असंतोष बढ़ा और दसवें गुरु Guru Gobind Singh के नेतृत्व में सिखों ने एक संगठित सैन्य शक्ति का रूप ले लिया। आगे चलकर यह शक्ति मुगल सत्ता के लिए गंभीर चुनौती सिद्ध हुई।

राजपूतों के साथ भी संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ, विशेषकर मारवाड़ के उत्तराधिकार विवाद के कारण। इससे मुगलों और राजपूतों के बीच वह सहयोग समाप्त हो गया, जो अकबर के समय से साम्राज्य की स्थिरता का आधार रहा था।
दक्कन में मराठा शक्ति का प्रतिरोध सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने आया। मराठों के साथ लंबे समय तक चलने वाले संघर्ष ने मुगल सेना और अर्थव्यवस्था को अत्यधिक कमजोर कर दिया।

इन सभी विद्रोहों और क्षेत्रीय चुनौतियों का संयुक्त प्रभाव यह हुआ कि मुगल साम्राज्य को विभिन्न मोर्चों पर लगातार सैन्य अभियान चलाने पड़े। इससे न केवल आर्थिक संसाधनों का क्षय हुआ, बल्कि प्रशासनिक नियंत्रण भी कमजोर पड़ने लगा। परिणामस्वरूप औरंगज़ेब के अंतिम वर्षों तक साम्राज्य बाहरी रूप से विशाल होने के बावजूद आंतरिक रूप से अस्थिर और कमजोर हो चुका था।

औरंगज़ेब की नीतियों का मूल्यांकन

औरंगज़ेब मुगल इतिहास के सबसे परिश्रमी, अनुशासित और कर्मठ शासकों में से एक था। वह व्यक्तिगत जीवन में सादगी, धार्मिक निष्ठा और प्रशासनिक उत्तरदायित्व के लिए प्रसिद्ध था। उसने शासन कार्यों में सक्रिय रुचि ली, अधिकारियों पर नियंत्रण रखा और साम्राज्य की एकता तथा विस्तार के लिए निरंतर प्रयास किया। उसके शासनकाल में मुगल साम्राज्य भौगोलिक दृष्टि से अपने चरम पर पहुँच गया, जो उसकी सैन्य क्षमता और प्रशासनिक दृढ़ता का प्रमाण है। औरंगज़ेब ने केंद्रीकृत प्रशासन, अनुशासन और शाही नियंत्रण को मजबूत करने का प्रयास किया। उसने भ्रष्टाचार पर नियंत्रण, न्याय व्यवस्था में सुधार तथा प्रशासनिक सादगी को बढ़ावा दिया। दक्कन में बीजापुर और गोलकुंडा का विलय तथा दक्षिण भारत में मुगल प्रभुत्व की स्थापना उसकी प्रमुख उपलब्धियों में शामिल है। किन्तु उसकी नीतियों की कुछ गंभीर सीमाएँ भी थीं, जिनका दीर्घकालीन प्रभाव मुगल साम्राज्य की स्थिरता पर पड़ा।

प्रथम, उसकी अत्यधिक विस्तारवादी सैन्य नीति ने साम्राज्य के संसाधनों पर भारी दबाव डाला। दक्कन में लंबे समय तक चलने वाले युद्धों ने शाही खजाने को कमजोर कर दिया। सेना के रख-रखाव, रसद और प्रशासनिक व्यय में निरंतर वृद्धि के कारण आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया। द्वितीय, उसकी धार्मिक नीति में कठोरता के तत्वों ने उस सामाजिक-राजनीतिक समन्वय को कमजोर कर दिया, जो अकबर के समय से मुगल शासन की शक्ति का आधार रहा था। जज़िया की पुनर्स्थापना, कुछ धार्मिक निर्णयों और रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण विभिन्न सामाजिक समूहों—राजपूतों, जाटों, सिखों और मराठों—में असंतोष बढ़ा, जिससे साम्राज्य के प्रति उनकी निष्ठा कमज़ोर हुई।

तृतीय, क्षेत्रीय शक्तियों के साथ लगातार संघर्ष ने प्रशासनिक नियंत्रण को कमजोर कर दिया। मराठों, सिखों, जाटों और राजपूतों के साथ लंबे समय तक चले संघर्षों के कारण साम्राज्य को कई मोर्चों पर सेना तैनात करनी पड़ी। इससे न केवल सैन्य शक्ति का विभाजन हुआ, बल्कि प्रांतीय प्रशासन भी शिथिल होने लगा। इसके अतिरिक्त, साम्राज्य का अत्यधिक विस्तार उसके प्रभावी प्रशासन के लिए चुनौती बन गया। विशाल भूभाग पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए पर्याप्त प्रशासनिक ढाँचा और संसाधन उपलब्ध नहीं थे। परिणामस्वरूप स्थानीय शक्तियाँ धीरे-धीरे स्वतंत्र होने लगीं।

इस प्रकार औरंगज़ेब की नीतियों का मूल्यांकन एक मिश्रित रूप में किया जा सकता है। वह एक सक्षम, परिश्रमी और दृढ़ शासक था, जिसने मुगल साम्राज्य को भौगोलिक दृष्टि से सर्वोच्च विस्तार तक पहुँचाया; किंतु उसकी सैन्य अति-विस्तार नीति, धार्मिक कठोरता और क्षेत्रीय संघर्षों ने साम्राज्य की आंतरिक शक्ति को कमजोर कर दिया। यही कारण है कि उसके शासनकाल के अंत तक मुगल साम्राज्य बाहरी रूप से विशाल, परंतु आंतरिक रूप से अस्थिर और कमजोर हो चुका था।

निष्कर्ष (Conclusion)

Aurangzeb का शासनकाल मुगल साम्राज्य के इतिहास में एक निर्णायक एवं परिवर्तनकारी चरण का प्रतिनिधित्व करता है। उसके नेतृत्व में साम्राज्य ने भौगोलिक दृष्टि से अपने सर्वोच्च विस्तार को प्राप्त किया। उत्तर भारत से लेकर दक्कन और दक्षिण के विस्तृत क्षेत्रों तक मुगल सत्ता की स्थापना उसकी सैन्य क्षमता, प्रशासनिक दृढ़ता और विस्तारवादी दृष्टिकोण को दर्शाती है। बीजापुर और गोलकुंडा जैसे शक्तिशाली राज्यों का विलय तथा दक्कन में दीर्घकालीन सैन्य अभियानों ने मुगल साम्राज्य को एक विशाल साम्राज्य के रूप में स्थापित किया। किन्तु इस विस्तार के साथ-साथ कई संरचनात्मक समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। निरंतर युद्धों के कारण साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी और प्रशासनिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा। विशाल साम्राज्य पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखना कठिन होता गया। प्रांतीय प्रशासन शिथिल होने लगा और स्थानीय शक्तियाँ अधिक स्वायत्त होने लगीं।

औरंगज़ेब की धार्मिक नीति, जो उसके व्यक्तिगत विश्वासों और शासन दृष्टिकोण से प्रेरित थी, ने मुगल शासन और विभिन्न सामाजिक-धार्मिक समूहों के बीच दूरी बढ़ा दी। जहाँ अकबर के समय स्थापित सामाजिक-राजनीतिक समन्वय साम्राज्य की स्थिरता का आधार था, वहीं औरंगज़ेब के काल में राजपूतों, मराठों, जाटों और सिखों के साथ बढ़ते संघर्षों ने उस संतुलन को कमजोर कर दिया। इसके अतिरिक्त, मराठों के साथ दीर्घकालीन संघर्ष ने मुगल शक्ति को सबसे अधिक प्रभावित किया। दक्कन में सम्राट की लंबी उपस्थिति के कारण उत्तर भारत में प्रशासनिक नियंत्रण कमजोर पड़ा। अनेक क्षेत्रीय विद्रोहों और चुनौतियों ने साम्राज्य की आंतरिक एकता को प्रभावित किया।

इस प्रकार औरंगज़ेब की नीतियाँ एक विरोधाभासी ऐतिहासिक स्थिति प्रस्तुत करती हैं—एक ओर अल्पकालीन सैन्य सफलता और क्षेत्रीय विस्तार, तो दूसरी ओर दीर्घकालीन प्रशासनिक, आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता। 1707 ई. में उसकी मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार संघर्ष, प्रांतीय स्वायत्तता और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय ने मुगल साम्राज्य को तेजी से पतन की ओर अग्रसर कर दिया।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि औरंगज़ेब की नीतियों ने मुगल साम्राज्य को अस्थायी रूप से विशाल और शक्तिशाली बनाया, किंतु वही नीतियाँ दीर्घकाल में उसके पतन के प्रमुख कारणों में भी परिवर्तित हो गईं। इसलिए औरंगज़ेब का शासनकाल मुगल साम्राज्य के विस्तार और अवनति—दोनों प्रक्रियाओं को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन का विषय है।

संदर्भ सूची (References)

1. Jadunath Sarkar (1922). *History of Aurangzib, Vol. I–V.* M.C. Sarkar & Sons, Calcutta, pp. 1–350.
2. Jadunath Sarkar (1932). *The Fall of the Mughal Empire, Vol. I.* Orient Longman, Calcutta, pp. 45–210.
3. Satish Chandra (2007). *Medieval India: From Sultanat to the Mughals, Part II.* Har-Anand Publications, New Delhi, pp. 210–298.
4. Satish Chandra (1997). *Essays on Medieval Indian History.* Oxford University Press, New Delhi, pp. 120–185.
5. Irfan Habib (1963). *The Agrarian System of Mughal India.* Oxford University Press, New Delhi, pp. 250–340.
6. Irfan Habib (1999). *Medieval India: The Study of a Civilization.* National Book Trust, New Delhi, pp. 175–240.
7. Athar Ali (1966). *The Mughal Nobility under Aurangzeb.* Oxford University Press, New Delhi, pp. 80–210.

8. M. Athar Ali (1997). *Essays in Mughal History.* Oxford University Press, New Delhi, pp. 95–160.
9. John F. Richards (1993). *The Mughal Empire.* Cambridge University Press, Cambridge, pp. 180–320.
10. John F. Richards (1975). *Mughal Administration in Golconda.* Oxford University Press, pp. 50–140.
11. Muzaffar Alam (1986). *The Crisis of Empire in Mughal North India.* Oxford University Press, New Delhi, pp. 30–165.
12. Muzaffar Alam (2004). *The Languages of Political Islam in India.* Permanent Black, pp. 200–260.
13. Harbans Mukhia (2004). *The Mughals of India.* Blackwell Publishing, Oxford, pp. 95–170.
14. R. C. Majumdar (1974). *The Mughal Empire.* Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai, pp. 320–410.
15. R. C. Majumdar (1978). *An Advanced History of India.* Macmillan, New Delhi, pp. 410–480.
16. Percival Spear (1990). *A History of India, Vol. II.* Penguin Books, London, pp. 75–140.
17. Stanley Lane-Poole (1898). *Aurangzib and the Decay of the Mughal Empire.* Oxford University Press, pp. 1–120.
18. Ishwari Prasad (1965). *The Mughal Empire.* Allahabad University Press, pp. 260–350.
19. Ishwari Prasad (1958). *A Short History of Muslim Rule in India.* Indian Press, Allahabad, pp. 300–380.
20. Bipan Chandra (2009). *History of Medieval India.* Orient BlackSwan, New Delhi, pp. 190–240.
21. K. A. Nizami (1989). *Some Aspects of Religion and Politics in India during the Thirteenth Century.* Aligarh, pp. 140–190.
22. S. R. Sharma (2001). *Religious Policy of the Mughal Emperors.* Asia Publishing House, pp. 210–300.
23. Meena Bhargava (2010). *Understanding Mughal India.* Orient BlackSwan, pp. 220–285.
24. Farhat Hasan (2004). *State and Locality in Mughal India.* Cambridge University Press, pp. 90–180.
25. Catherine B. Asher (1992). *Architecture of Mughal India.* Cambridge University Press, pp. 150–220.